ग़ज़ल गायकी का रवायती अंदाज

संगीत

मंजरी सिन्हा

गीतनुमा गाई जा रही ग़ज़लों के इस दौर में ग़ज़ल गायकी का रवायती अंदाज गुम होता जा रहा है। ऐसे में 'सुर-तरंग' ने गुड़गांव के साउथ सिटी 'पैशियो' सभागार में एक खास 'शामे-ग़ज़ल' आयोजित की। कलाकार थीं पूजा गोस्वामी, जो आजकल अमेरिका में भारतीय शास्त्रीय संगीत का अध्यापन कर रही हैं।

संगीत प्रेमी परिवार में जन्मी पूजा को शास्त्रीय संगीत की तालीम के लिए कहीं बाहर नहीं जाना पड़ा। पिता शैलेंद्र गोस्वामी के मार्गदर्शन के अलावा दिल्ली विश्वविद्यालय से उन्होंने संगीत में स्नातकोत्तर और डाक्टरेट की डिग्री भी हासिल की। ग़ज़ल गायकी का हुनर उन्होंने श्रीमती शांति हीरानंद से सीखा जो खुद बेगम अख्तर की शागिर्द रही हैं।

उपशास्त्रीय संगीत की श्रेणी में गिनी जाने वाली ग़ज़ल के लिए दरअसल शास्त्रीय संगीत की पृष्ठभूमि ही नहीं, सही तालीम और मिजाज भी बराबर की अहमियत रखते हैं। पूजा की इस शामे-ग़ज़ल में ये तीनों ही बातें उजागर थीं। ग़ज़ल के भावों के अनुरूप रागों की जमीन, शेर में वर्णित एहसासात का तर्जे-बयां और सही तलफ्फुज जैसी शर्तों को पूरा करने के अलावा पूजा की अदायगी में उनके साहित्य और संगीत प्रेम की भी अहम भूमिका थी। जो ग़ज़लों के चुनाव से लेकर उन्हें बरतने के अंदाज तक में नुमायां थीं।

ख्वाजा मीर दर्द की कही ग़ज़ल 'जग में आकर इधर उधर देखा/ तू ही आया नजर जिधर देखा' से उन्होंने अपने प्रोग्राम का आगाज किया तो वक्त के मुताबिक राग पूरिया धनाश्री के चुनाव ने सोने में सुहागे वाला काम किया। सही समय पर बरते राग की क्या तासीर होती है यह बात ग़ज़ल के हर अशआर में पूरे समय महसूस की जा सकती थी।

पूजा गोस्वामी

शमीम जयपुरी की 'जमीं पे रह के दमाग आसमां पे रहता है' को देस के पुरलुत्फ सुरों में पेश कर पूजा ने बेगम अख्तर की याद दिला दी जिन्होंने इस ग़ज़ल को अमर कर दिया। राग चारुकेशी की जमीन पर अगली पेशकश थी 'दर्दे दिल लाख कहो उनपे असर कुछ भी नहीं/ दिल में रहते हैं मगर दिल की खबर कुछ भी नहीं'- जलील मानिकपुरी का कलाम था। उनकी एक और ग़जल पूजा ने राग हमीर में पेश की।

जायका बदलने के लिए पूजा ने इसके बाद एक दादरा भी गाया। पीलू जैसे शुरुआती आलाप के बाद राग देसी की करवट लेती यह बंदिश थी 'सजनवां रे बैरी हो गए हमार'। प्रायः पीलू, खमाज, गारा जैसे हल्के-फुल्के रागों में गाई जाने वाली इस शैली को राग देसी में पेश कर पूजा ने एक नयापन भी दिया।

मीर तकी मीर, सुदर्शन फाकिर जैसे शायरों के कलाम जौनपुरी, मिश्र तिलंग जैसे रागों में पेश करने के बाद राग मिश्र [illegible] में पूजा ने पुराने अंदाज की एक ग़जल दाग देहलवी की पेश की जो उन्होंने अपनी हज यात्रा के दौरान 'काबा' में कही थी 'सबक ऐसा पढ़ा दिया तूने/ दिल से सब कुछ भुला दिया तूने'। इस अंतिम पेशकश की खासियत यह थी कि कहरवा में 'लग्गी' बजने के बाद ठेका रोककर आलापमयी शैली में अशआर कहे जाने और गिरारा खत्म होते ही तबले पर टनटनाती लग्गी समां बांध देती।

पूरी शाम पूजा गोस्वामी ने जिस रवायती अंदाज और स्तरीयता का निर्वाह किया, उस दर्जे के सुनने वाले भी उन्हें नसीब होते तो बात ही कुछ और होती। अगली बार जब वे भारत आएं तो उन्हें बेहतर आयोजकों के लिए गाना चाहिए।